कानपुर (कानपुर व लखनऊ में एक साथ प्रकाशित) • शनिवार, 14 फरवरी 2026 • माघ 25, शक संवत 1947, फाल्गुन कृष्ण द्वादशी, विक्रम संवत 2082 WATCH GOD WATCHDOG पेज 16* • मूल्य सिर्फ ₹6.00 facebook.com/nbtlucknowtwitter.com/nbtlucknow Vol.8 no.44

हैपी वैलंटाइंस डे

NBT
नवभारत टाइम्स

एनबीटी में विज्ञापन देने के लिए 18001205474 पर कॉल करें। नवभारत टाइम्स का अंक प्राप्त करने के लिए 18001200004 पर कॉल करें या subscribe.timesofindia.com पर जाएं।

AI और रोबॉट करेंगे दिल का इलाज

डिप्टी सीएम बोले, केजीएमयू आ रहे पड़ोसी मुल्क के मरीज़, हर जिले में मेडिकल कॉलेज से मजबूत हुई सेहत

कॉर्डिकॉन-2026

■ NBT न्यूज, लखनऊ

केजीएमयू (KGMU) अब न केवल प्रदेश, बल्कि देश और पड़ोसी मुल्कों के लिए भी हृदय चिकित्सा का बड़ा केंद्र बन गया है। अटल बिहारी वाजपेयी कन्वेंशन सेंटर में 'कॉर्डिकॉन 2026' की शुरुआत पर उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि लारी कॉर्डियोलॉजी विभाग में रोबोटिक सर्जरी और एआई तकनीक से इलाज को नई रफ्तार दी जा रही है। सरकार केजीएमयू के इस आधुनिक सफर में पूरी मदद देगी।

ब्रजेश पाठक ने कहा, लारी बनेगा हृदय चिकित्सा का हब

डिप्टी सीएम ने कहा कि यूपी में स्वास्थ्य सेवाएं तेजी से बदली हैं। अब हर पांच हजार की आबादी पर अस्पताल की सुविधा है और हर जिले में मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं। इससे न केवल इलाज सुलभ हो रहा है, बल्कि नए डॉक्टरों की फौज भी तैयार हो रही है। कुलपति प्रो. सोनिया नित्यानंद ने संस्थान में उपलब्ध आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का ब्योरा साझा किया।

मौजूद रहे ये विशेषज्ञ: इस दौरान कॉर्डियोलॉजी सोसायटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. धीमान कहाली, डॉ. अक्षय प्रधान, डॉ. शरद चन्द्रा और डॉ. प्रवेश विश्वकर्मा समेत कई नामचीन डॉक्टर मौजूद रहे।

'एआई हर मर्ज़ की दवा नहीं'

■ NBT न्यूज, लखनऊ: मरीज की सुरक्षा किसी एक डॉक्टर या कर्मचारी की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरी टीम की होती है। आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) इलाज में मददगार हो सकता है, लेकिन यह हर मर्ज की दवा नहीं है। डॉक्टरों और स्टाफ को लगातार एआई तकनीक सीखते रहना चाहिए। ये बातें यूपी आयुर्विज्ञान यूनिवर्सिटी सैफई के कुलपति प्रो. अजय सिंह ने कही। वह शुक्रवार को ऐग मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में पेशेंट सेफ्टी कॉन्क्लेव 2026 में अपनी बात रख रहे थे। उन्होंने कहा कि इलाज के दौरान होने वाली 50 फीसद से ज्यादा गलतियों को रोका जा सकता है। इस दौरान डॉ. विकास, डॉ. बनानी पोद्दार के अलावा अन्य ने भी अपनी बात रखी।

सावधान! ये तीन दुश्मन हैं खतरनाक

कॉन्फ्रेंस में लारी के विभागाध्यक्ष डॉ. ऋषि सेठी ने चेताया कि यदि किसी को डायबिटीज के साथ बीपी और मोटापा है, तो उसे हार्ट अटैक का खतरा कई गुना ज्यादा है। उन्होंने बताया कि पेट की चर्बी खराब कोलेस्ट्रॉल बढ़ाती है, जिससे धमनियों में ब्लॉकिज होने लगता है।

डॉक्टर्स की सलाह: दिल का ध्यान कैसे रखें

रेगुलर चेकअप: 30 साल की उम्र के बाद शुगर, बीपी और कोलेस्ट्रॉल की जांच जरूर कराएं।

30 मिनट का नियम: रोजाना कम से कम आधा घंटा टहलना अनिवार्य है।

डाइट कंट्रोल: मीठा, नमक और डिब्बाबंद खाने से पूरी तरह परहेज करें।

साइलेंट किलर: हाई ब्लड प्रेशर को हल्के में न लें, यह दिल की मांसपेशियों को कमजोर कर देता है।

बच्चों को सिखाई टूथ-ब्रश करने की सही टेक्निक

■ NBT न्यूज, लखनऊ

बच्चों को बेसिक ओरल हाइजीन प्रैक्टिस और टूथ-ब्रश करने की सही टेक्निक सिखाने के लिए राम मनोहर लोहिया संस्थान में कार्यक्रम रखा गया। इंटरनेशनल ओरल एंड मैक्सिलोफेशियल सर्जरी डे पर डेंटिस्ट्री डिपार्टमेंट ने डेंटल स्क्रीनिंग कैंप भी लगाया। संस्थान के निदेशक डॉ. सीएम सिंह, डीन प्रो. प्रद्युम्न सिंह और प्रो. विक्रम सिंह की अगुवाई में इसका आयोजन हुआ।

डेंटिस्ट्री विभाग की अध्यक्ष डॉ. शैली महाजन ने बच्चों को सही तरीके से ब्रश करने का तरीका समझाया। रोजाना दांत साफ रखने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि छोटी उम्र में अच्छी आदतें अपनाने से आगे चलकर बड़ी दिक्कतों से बचा जा सकता है। डॉ. पद्मनिधि अग्रवाल ने चेहरे और दांतों की चोटों के बारे में जानकारी दी। डॉ. श्वेता मेहता ने बच्चों को डेंटल उपकरणों से रुबरू कराया, ताकि उनका डर कम हो सके। डॉ. प्रियंवदा ने कैविटी से बचाव के उपाय बताए। कार्यक्रम में पजल और क्विज भी करवाई गई। आखिरी में छात्रों और शिक्षकों को ओरल हाइजीन किट बांटी गई।

कैंसर के बेहतर इलाज के लिए आज से होगी चर्चा

■ NBT न्यूज, लखनऊ: फेफड़ों के कैंसर के बेहतर इलाज के लिए केजीएमयू में शनिवार को देश-विदेश के विशेषज्ञ एक मंच पर अनुभव साझा करेंगे। डॉक्टरों को नई तकनीकों और दवाओं की जानकारी दी जाएगी। लोगों को फेफड़ों के कैंसर की समय रहते पहचान करने के तरीके भी सुझाए जाएंगे। यह जानकारी केजीएमयू पल्मोनरी ऐंड क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष डॉ. वेद प्रकाश ने दी। वह शुक्रवार को केजीएमयू के शताब्दी भवन में पत्रकारवार्ता में इसे साझा कर रहे थे। बताया कि केजीएमयू के पल्मोनरी एवं क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग, इंडियन चेस्ट सोसायटी और पल्मोक्रिट फाउंडेशन की तरफ से 14 व 15 फरवरी को शताब्दी भवन फेज-2 के सभागार में एआईपीकॉन 2026 का आयोजन होगा।

आवाज़ ... आम आदमी की

इन्क़िलाबी नज़र

लखनऊ, शनिवार, 14 फरवरी 2026

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है, शूर को जीवन तृण है, जिसने इंद्रियों को वश में किया उसको स्त्री तृण-तुल्य जान पड़ती है, निस्पृह को जगत तृण है
-चाणक्य

वर्ष 18 अंक 164 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ- 12

तापमान - अधिकतम 25.6°C (+0.1) न्यूनतम 11.1°C(+0.8) सेंसेक्स 82,626.76 (-1048.16) निफ्टी 25,471.10 (-336.10) सोना 1,55,930 चांदी 2,80,000 मुद्रा - डालर 90.56 दिरहम 24.66 रियाल 24.15

एराज मेडिकल कालेज एण्ड हॉस्पिटल में पेशेंट सेफ्टी कॉन्क्लेव-2026

हर मर्ज की दवा नहीं हो सकता एआई

लखनऊ (सं)। उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय सैफई के कुलपति प्रो. अजय सिंह ने बताया कि मरीज की सुरक्षा (पेशेंट सेफ्टी) किसी एक चिकित्सक या स्टाफ की जिम्मेदारी नहीं यह टीम वर्क है। चिकित्सीय पेशे में त्रुटि (कॉम्लीकेशन) और गलती (एरर) में अंतर होता है। मरीज की सुरक्षा में होने वाली 50 फीसद से ज्यादा गलतियों को रोका जा सकता है। उन्होंने कहा कि एआई (आर्टिफिशियन इंटेलिजेंस) हर मर्ज की दवा नहीं हो सकती। पेशेंट सेफ्टी में एआई मददगार बन सकता है। मगर इलाज के दौरान होने वाली गलतियों को पूरी तरह से रोक नहीं सकता। इसके लिए लगातार सीखने की जरूरत है। गलतियों से सीखें ताकि दोबारा उस गलती की संभावना न रहे।

मुख्य अतिथि प्रो. अजय एराज लखनऊ मेडिकल कालेज एण्ड हॉस्पिटल में आयोजित पेशेंट सेफ्टी कॉन्क्लेव-2026 में बोल रहे थे। उन्होंने बताया कि जब भी बात होती है तो बड़े अस्पतालों या चिकित्सा संस्थानों को लेकर ही योजनाएं बनाई जाती हैं। पीएचसी और सीएचसी पर भी ध्यान देने की जरूरत है। वहां गलतियों की संभावना अधिक है जो मरीज के लिए घातक साबित होती हैं। प्रो. अजय ने बताया कि अगर किसी प्रोसीजर में डाक्टर से गलती हो जाए तो उसे सुधारे न कि गलती करने वाले का नाम सार्वजनिक करें। ऐसा करना डॉक्टर के प्रति मरीज के मन में विश्वास को कम करता है। उन्होंने सलाह दी कि मरीज की सुरक्षा के प्रति बने मानकों के बारे में युवा डॉक्टरों को लगातार प्रशिक्षित करें। उन्हें उन बिन्दुओं पर सिखाएं जहां चूक की संभावना अधिक होती है। कार्यक्रम में आए इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ क्वालिटी मैनेजमेंट के निदेशक डॉक्टर गिरधन ज्ञानी ने बताया कि आज कई चिकित्सा संस्थानों और अस्पतालों में पेशेंट सेफ्टी पर कोई बात ही नहीं करता। इसी का कारण है कि गड़बड़ियों की संभावना लगातार बनी रहती है। करीब 60 प्रतिशत गलतियां मानवीय चूक के कारण होती हैं। इनको रोकने के लिए सबसे बेहतर तरीका मॉनीटरिंग बढ़ाना है। चाहे आईसीयू हो, ओटी हो, ओपीडी या वार्ड निगरनी तंत्र मजबूत होने से गलतियां कम होंगी। इस अवसर पर एराज मेडिकल कालेज के लिए तैयार पेशेंट सेफ्टी सिवोनियर और पेशेंट सेफ्टी फ्लायर का लोकार्पण किया गया। 'स्वास्थ्य सेवा में त्रुटियों की समझ और सुरक्षा की संस्कृति का निर्माण' की थीम पर आयोजित दो दिवसीय कॉन्क्लेव में पहले दिन डॉ. डी.सी.एस. रेड्डी, डॉ. वैभव शुक्ला, डॉ. समीरन पांडा, पद्मश्री डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. सुचेता पी. दांडेकर, डॉ. अविनाश सुपे, प्रो. आर.के. गर्ग और प्रो. एस.जे.एस. फ्लोरा, डॉ. एम.एम.ए. फरीदी, डॉ. अनित परिहार, डॉ. टी. वेंकटेश, डॉ. जमाल मसूद, डॉ. हैदर अब्बास और डॉ. (कर्नल) डी.के. वासुंकर, डॉ. एस. तसलीम रजा समेत कई चिकित्सक मौजूद थे।

मरीजों की सुरक्षा को बढ़ा सकती है तकनीक

पेशेंट सेफ्टी कॉन्क्लेव-2026 के दौरान आयोजित एक वैज्ञानिक सत्र में एरा यूनिवर्सिटी के अतिरिक्त निदेशक जॉ अली खान ने एआई और डिजिटल टेक्नोलॉजी की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आधुनिक तकनीकें डॉक्टरों की मदद करके मरीजों की सुरक्षा को कई गुना बढ़ा सकती हैं। श्री खान ने कहा कि स्मार्ट आईसीयू की अवधारणा के तहत मरीजों की 24 घंटे लगातार निगरानी की जाती है, जिससे मरीज की हालत बिगड़ने से पहले ही खतरे के संकेत मिल जाते हैं और समय रहते इलाज संभव हो पाता है। उन्होंने बताया कि क्लिनिकल डिसीजन सपोर्ट सिस्टम डॉक्टरों को दवाओं से जुड़ी जानकारी, मरीज का डेटा और जरूरी अलर्ट प्रदान करता है, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रिया आसान व अधिक सटीक बनती है। उन्होंने कहा कि इन डिजिटल प्रणालियों से डॉक्टरों पर मानसिक दबाव कम होता है और इलाज की गति तेज होती है। एआई आधारित सिस्टम से उपचार अधिक सुरक्षित, प्रभावी और मरीज-केंद्रित बनता है, जो भविष्य की स्वास्थ्य सेवाओं की दिशा तय करेगा।

काम में गलती हो तो सुधारें जरूरः वीसी

एरा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अब्बास अली महदी ने बताया कि काम करने पर गलतियां होने की संभावना हमेशा बनी रहती है। अगर गलती हो तो उसे समझें। गलती से सीखें और उसे सुधारें जरूर तभी मरीज की जान बचाना आसान होगी। उन्होंने युवा चिकित्सकों और स्टाफ को सलाह दी कि गलती हो जाए तो उसे स्वीकार करें और सुधारने की कोशिश करें। गलती को अनदेखा न करें क्योंकि चिकित्सीय पेशे में एक ही गलती को बार बार दोहराना उचित नहीं है। कार्यक्रम में एरा यूनिवर्सिटी की प्रो-वीसी प्रोफेसर फरजाना महदी ने कहा कि गलतियों को कम करने के लिए तकनीक का इस्तेमाल करें। तकनीक का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है और इसका लाभ मरीजों को मिले इसके लिए जरूरी है कि डॉक्टर नई तकनीक को हमेशा सीखते रहें।

कॉन्क्लेव में विशेषज्ञों ने दी सलाह

- डॉ. नीलिमा क्षीरसागर ने कहा कि 'उचित दवा लेखन कौशल ही रोगी सुरक्षा की नींव है।' दवा देने के साथ ही मरीज की शंकाओं का समाधान जरूरी करें।
- डॉ. विकाश मेधी ने कहा कि कम्युनिकेशन स्किल पर ध्यान दें। भाषा सबंधी गलतियों से भी मेडिकेशन एरर हो सकती है जिसका खामियाजा मरीज को भुगतना पड़ता है।
- डॉ. बनानी पोद्दार ने कहा कि मरीज के अनुसार मानक बदल जाते हैं। गर्भवती महिला और साठ साल के बुजुर्ग को एक ही बीमारी में समान दवा नहीं दी जा सकती। उनकी दवाएं अलग-अलग होंगी।
- डॉ. टी. वेंकटेश ने बताया कि अगर नियमों का सख्ती से पालन किया जाए तो चूक की संभावना कम हो सकती है। उन्होंने कहा कि गलती होने पर उसकी जड़ में जाना जरूरी है। ऐसा करने से गलती में आसानी से सुधार हो सकता है।